Toppersnotes®
Unleash the topper in you

वन दरोगा

वन एवं वन्यजीव रक्षक उत्तर प्रदेश

UTTAR PRADESH SUBORDINATE SERVICE SELECTION COMMISSION

मुख्य परिक्षक

भाग – 2

भारत एवं विश्व का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

उत्तर प्रदेश – वनरक्षक एवं वन्य जीव रक्षक

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	भारत का इतिहास	
1.	प्राचीन इतिहास	
	• सिन्धु घाटी सभ्यता	1
	• वैदिक काल	5
	• बौद्ध धर्म	8
	• जैन धर्म	10
	• महाजनपद काल	11
	• मौर्य वंश	12
	• गुप्त वंश	15
2.	मध्यकालीन भारत	
	• भारत पर आक्रमण	19
	• सल्तनत काल	20
	• मुगल काल	25
	• भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	31
	• मराठा उद्भव	32
3.	आधुनिक भारत का इतिहास	
	• भारत में यूरोपियन शक्तियों का आगमन	34
	• मराठा शक्ति का उत्कर्ष	37
	• अंग्रेजो की भू–राजस्व पद्धतियाँ	39
	• गवर्नर व वायसराय	42
	• 1857 की क्रान्ति	46
	• प्रमुख आन्दोलन	48
	• कांग्रेस अधिवेशन	51
	• भारतीय क्रांतिकारी संगठन	62

भारत का भूगोल

1.	भारत का विस्तार	66
2.	भारत के भौगोलिक भू–भाग	69
3.	भारत का अपवाह तंत्र	75
4.	जैव विविधता	81
5.	भारत की मिट्‌टी मृदा	92
6.	जलवायु	94
7.	कृषि	95
8.	भौतिक भूगोल	97
	● सौर मंडल	
	● पृथ्वी का वायुमण्डल	
9.	विश्व का सामान्य अध्ययन	102

भारतीय संविधान

1.	भारतीय राज्यव्यवस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	149
2.	भारतीय संविधान के स्त्रोत	156
3.	राष्ट्रपति की शक्तियाँ एवं कार्य	177
4.	लोकसभा	189
5.	न्यायपालिका	203
6.	संविधान संशोधन	221

प्राचीन इतिहास

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोट्स ने इतिहास की प्रथम पुस्तक "हिस्टोरिका" लिखी ।
- हैरोडोट्स को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है –
  1. पुरातात्विक स्त्रोत
  2. साहित्य स्त्रोत
  3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को हम निम्न प्रकार बांट सकते है ।

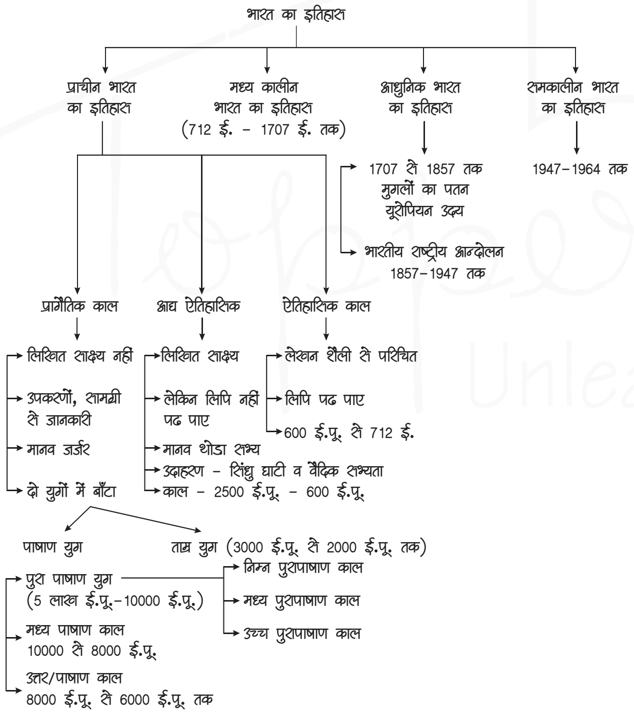

पुरापाषाण काल

- आधुनिक मानव होमोसेपियन्स का उदय ।
- मानव आग जलाना ।
- इस काल में चापर – चौपिग संस्कृति का उदय, डी एन वाडिया ने खोज की, यह उत्तर भारतीय संस्कृति है ।
- दक्षिण भारत की संस्कृति हैण्ड – एक्स संस्कृति है इसकी खोज रॉबर्ट ब्रुस फुट ने की ।
- चापर-चौपिंग एवं हैण्ड एक्स संस्कृति (उत्तर एवं दक्षिण) मिलन स्थल चौतरान (जम्मू कश्मीर) है ।

प्रमुख स्थल

भीम बेटका – शैला शील चित्रों के प्रसिद्ध;
डीडवाना (राजस्थान); हथनौरा

मध्य पाषाण काल

- इस काल को माइक्रोलिथ काल कहते है, छोटे – छोटे पाषाण उपकरणों के कारण ।
- भारत में इस काल का जनक CL क्लाईल ।
- मानव ने इस काल में सर्वप्रर्थम पशु पालन करना सीखा ।
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है । बागौर (राजस्थान) एवं आदमगढ (MP) में पाये जाते है ।
- मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल सराय नाहर (यूपी) है ।

उत्तर/नव पाषाण काल

- सर जॉन लुबाक ने नव पाषाण काल शब्द दिया ।
- गार्डन चाइल्ड ने इस काल को "नव पाषाणिक क्रांति" कहा ।
- ली मेंसियर ने उत्तर भारत में नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- नेविलियन फ्रेंजर ने दक्षिण भारत से नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- मानव ने कृषि करना सीखा ।
- वृहद पैमाने पर पशुपालन एवं ग्रामीण संस्कृति के साक्ष्य मिले ।

प्रमुख स्थल

1. मेहरगढ (पाक) – नव पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल
   8000 BC पूर्व कृषि के साथ साक्ष्य मिले ।
2. कोल्डी हवा – (यूपी) – 6000 वर्ष पूर्व चावल की खेती के साक्ष्य मिले ।
3. बुर्जहोम एवं गुपफकराल (J&K) बुर्जहोम से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य भी मिले है ।

नोट – प्रागऐतिहासिक काल के जनक भारत में डा. प्राइम रोज थे । जिन्होने लिंगसुगुर (कर्नाटक) से पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे । नव पाषाण काल में दक्षिण भारत की प्रमुख फसल रागी थी ।

सिन्धु घाटी सभ्यता

परिचय

हडप्पा सभ्यता

- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।

- जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन – 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- कनिघम ने इस ओर दुनिया का ध्यान दिलाया, कनिघम को भारतीय पुरातात्विक विभाग का पितामह कहा जाता है ।
- 1921 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने इसका उत्खनन किया ।
- सर्वप्रथम इस स्थल की खोज होने के कारण यह स्थल हडप्पा सभ्यता कहलाया ।

अन्य नाम

सिंधु घाटी सभ्यता
सरस्वती नदी घाटी सभ्यता
कांस्य युगीन सभ्यता
नगरीय सभ्यता

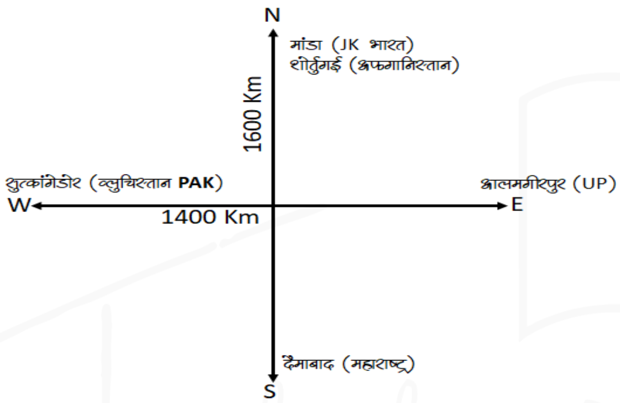

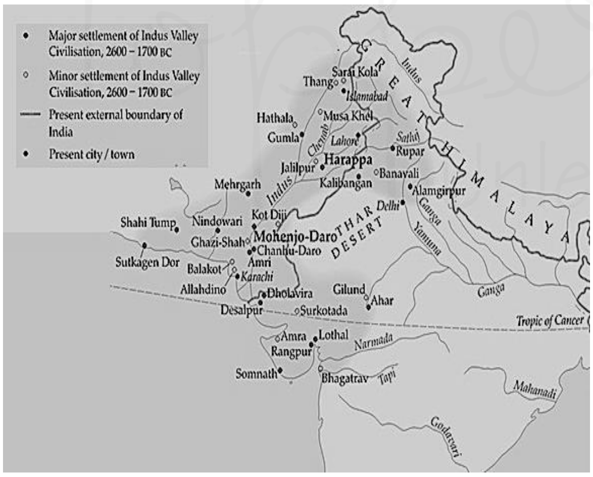

1300 किमी समुद्री सीमा

नोट

- अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे – सार्तगोई एवं मुंडीगॉक है ।
- सार्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के साक्ष्य मिले है
- सिंधु घाटी सभ्यता मेसोपोटामिया के सभ्यता से 12 गुना बडी थी जबकि मिश्र की सभ्यता से 20 गुना बडी थी ।
- आजादी से पूर्व खोजे समस्त स्थल पाकिस्तान में चले गये । भारत में केवल दो स्थल रहे, रंगपुर (गुजरात) और रोपड (पंजाब)

- भारत का सबसे बडा स्थल राखीगढी (हरियाणा) है, दूसरा बडा स्थल धौला वीरा (गुजरात) है ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  - गनेडीवाल
  - हडप्पा
  - मोहनजोदडों

निवासी

यहाँ से प्राप्त कंकालों के आधार पर चार प्रजातियों में बांटा जा सकता है ।

1. भूमध्य सागरीय
2. अल्पाईन
3. मंगोलायड
4. प्रोटो आस्ट्रालायड

सर्वाधिक प्रजाति भूमध्य सागरीय प्रजाति मिली है ।

नगर नियोजन

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथापूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान है ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है जबकि चन्हुदडो में कोई परकोटा नही ।
- धोलावीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यम ।
- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए है ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था तथा सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था । कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे । ईंट का आकार – 1 : 2 : 4

- जल निकासी हेतु पक्की ईंटों की नालियां होती थी विश्व की किसी अन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

प्रमुख नगर

1. हड़प्पा

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब- शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते हैं ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते है ।
- शंख का बना बैल व 18 वर्ताकार चबूतरे मिले है ।
- यहाँ से सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला आवास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुआ पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः यह उर्वरता की देवी होगी ।

2. मोहनजोदडो

- स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
- सिन्धु नदी के तट पर
- उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी
- मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार –
  (a) 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर
  (b) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
  (c) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बडी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौडी है ।
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(v) हाथी का कपालखण्ड
(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है ।
  (a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।
(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।
(ix) योगी की मूर्ति मिली है ।
(x) शिव की मूर्ति मिली है ।
(xi) बाढ से पतन के साक्ष्य मिलते है ।
(xii) सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहाँ मिलती है ।

3. लोथल

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे
  उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)
  → यह एक व्यापारिक नगर था ।
  (i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
    (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
  (ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
  (iii) चावल के साक्ष्य
  (iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है
  (v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
  (vi) चक्की के दो पाट
  (vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते हैं (एकमात्र)
  (viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदा

- स्थिति = गुजरात
  (i) घोडे की हड्डियाँ
- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. रोजदी (गुजरात)

हाथी के साक्ष्य

6. रोपड (PB)

- मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. धौलावीरा

गुजरात – कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)
उत्खननकर्ता – रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गभाग)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते हैं (खेल का मैदान)

8. चन्हुदड़ों

उत्खननकर्त्ता - एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) - अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते हैं ।
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है ।
- एक सौन्दर्य पेटिका मिली है । जिसमें एक लिपिस्टिक है ।

कालीबंगाः-
अवस्थिति- हनुमानगढ
नदी-घग्घर/सरस्वती/दृषद्वती/चौतांग
उत्खननकर्ता- अमलानन्द घोष
(1952)अन्य सहयोगी- बी. बी. लाल
बी. के. थापर
जे. पी. जोशी एम. डी. खरे
कालीबंगा शाब्दिक अर्थ- काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)
उपनाम- दीन हीन बस्ती- कच्ची ईंटों के मकान ।

सामग्री

- सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है ।
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुए ।
- एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शोधन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है ।
- जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों
- मकान कच्ची ईंटों के थे बल्लियो की छत होती थी
- जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।
- ईंटों को धूप से पकाया जाता था ।
- वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुहरे (मेसोपोटामिया) मिली है ।
- लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीची गई है ।
- यहाँ से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।
- यहाँ से बैल व बारहसिंहा के अस्थि अवशेष मिले है।
- यहाँ का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहाँ गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।
- यहाँ उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है
- यहाँ प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।
- इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बिरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन

अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- कपास का उत्पादन सर्वप्रर्थम सिंधुवासियों ने किया ।
- सारगोन अभिलेख में सिंधु वासियों को मेलुहा (नाविको का देश) कहा गया है ।
- सिंधु वासियों का प्रिय पशु कुबड वाला बैल था ।
- दूसरा मुख्य पशु एक सींग वाला गेंडा था ।
- मातृ सत्तात्मक वाला समाज था ।

वैदिक व उत्तर वैदिक काल (साहित्य)

1500 – 600 BC

इस काल को हम दो भागों में बांट सकते है ।

1. ऋग्वैदिक काल (1500 BC – 1000 BC)
2. उत्तरवैदिक काल (1000 BC – 600 BC)

परिचय

वैदिक सभ्यता आर्यो द्वारा बसाई गई सभ्यता है ।

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

— वैदिक साहित्य

1. वेदांग
2. धर्मशास्त्र
3. महाकाव्य
4. पुराण
5. स्मृतियाँ

— वैदिक साहित्य का अंग नहीं है ।

इस काल का इतिहास इस काल में लिखे गए साहित्य पर आधारित है । इस साहित्य को वैदिक साहित्य / श्रव्य साहित्य भी कहा जाता है । जो निम्न है ।

वेद

- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है ।
  वेद 4 है –

1. ऋग्वेद

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580 (10600) मन्त्र है ।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है ।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है ।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है ।
  - ➢ गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की ।
  - ➢ गायत्री मंत्र सवितृ / सावितृ (सूर्य) को समर्पित है ।
- सर्वाधिक मूर्तियां मातृ देवी की मिली है ।
- लिंग एवं योनि की पूजा करते थे ।
- योग से परिचित थे ।
  प्राकृतिक बहुदेव वाद में विश्वास करते थे ।
- मृत्यु के बाद भी जीवन में विश्वास करते थे ।
- सिंधुवासी घोडा, गाय, शेर और ऊँट से परिचित नही थे ।
- सिंधु वासी लोहे से परिचित नही थे ।

2. यजुर्वेद

- यह 2 भागों में है – (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है ।
- यज्ञ – अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद – धनुर्वेद

3. सामवेद

- संगीत का प्राचीनतम स्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद

- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि – रचयिता
- अन्य नाम – अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने – टोटको व चिकित्सा का उल्लेख । औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र – मंत्र आदि ।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला – ब्रह्म
- उपवेद – शिल्पवेद ।

वेद एवं उनसे संबंधित उनके ब्राह्मणक, आरण्यक एवं उपनिषद् ग्रंथ

वेद	भाग	विषय	पुरोहित	ब्राह्मणक	आरण्यक	उपनिषद
ऋग्वेद	साकल बालखिल्य वास्कल	छन्द/प्रार्थनाएं	होता/होतृ	ऐतरैय	ऐतरैय कौशीतकी	एतरैय कौशील्की
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद	उच्च स्वर में उचारित किये जाने वाले मंत्र	अध्वर्यु	शतपथ तैतरैय मायान	तैतरैय मैत्रायणी	कठ, तैतरैय वृहदायण्यक नाराण्यणश्वर श्वेतस्श्वर, ईश, मुण्डक
सामवेद	कौथूम, राणण्यम और जैनिय	संगीत, गायन	उदगाता	पंचविश, षडविंच जैमीनी	जैमीनी छन्दोग्य	केन जैमीनी छन्दोग्य
अथर्ववेद	शौनक,पीलाद	भौतिकवादी जादू, टोना लौकिक विधि विधान	ब्रहमा	गोपथ	–	प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य

- मुण्डकोपनिषद से सत्यमेव जयते लिया गया है ।
- प्रथम तीन वेदों को वेदत्रय कहा जाता है ।
- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
- उपनिषद को वेदांत कहते है ।

वेदांग

वेदों के सरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया । यह वैदिक साहित्य का हिस्सा नही है । इसके छह भाग है

1. शिक्षा – इसे वेदों की नासिका कहा जाता है ।
2. ज्योतिष – इसे वेदों की आंख कहा जाता है ।
3. व्याकरण – इसे वेदों का मुख कहा जाता है ।
4. छनद – इसे वेदों का पैर कहा जाता है ।
5. निरूक्त – इसे वेदों का कान कहा जाता है ।
6. कल्प – इसे वेदों की हाथ कहा जाता है ।

कल्प के अंतर्गत शुल्व सूत्र ज्यामिति की सबसे प्राचीनग्रन्थ है ।

पुराण – संख्या – 18

ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया

- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युजंय मंत्र

- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख

स्मृति साहित्य

- सबसे प्राचीन उपनिषद छान्दोग्य उपनिषद है ।
- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है

आर्यो का निवास

- आर्यो के निवास के बारे में विभिन्न मत प्रचलित है
- बाल गंगाधर तिलक के अनुसार आर्यो का मूल निवास उत्तरी ध्रुव है ।
- दयानंद सरस्वती के अनुसार तिब्बत मूल के आर्य है
    - डॉ. पैनका ने जर्मनी को मूल स्थान बताया ।
    - मेक्स मूलर के अनुसार आर्य मध्य एशिया (वैक्टीरियाई) है ।

आर्यो के उत्पति के संबंधित हाल ही में राखीगढ में उत्खनन से भी आर्यो की मूल उत्पति के संबंध मे पता नही लग पाया ।
सिंधु वासियों का राखीगढ से जो डीएनए मिला है । वह डीएनए उत्तर भारतीयों एवं दक्षिण भारतीयों में भी पाया गया है ।

ऋग्वेद काल के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- ऋग्वेद में वर्तमान की कई नदियों का उल्लेख मिलता है ।

सिंधु	सिंध
झेलम	वितस्तता
रावी	परूषणी
व्यास	विपाशा
सतलज	शतद्रि
चेनाब	अश्किनी
सरस्वती	सरस्वती
गोमल	गोमती
स्वात	सुवास्तु
कुर्रम	कुर्भ
काबुल	कुम्भा

नोट- गोमल, स्वात, कुर्रम, काबुल अफगानिस्तान की नदियां है ।

- ऋग्वेद कालीन प्रशासन का मुखिया राजा होता था ।
- राजा के सहयोग हेतु तीन संस्थाओं का उल्लेख मिलता है ।
- यहाँ प्रशासन खंड स्तरीय होता है । जन सबसे बडी इकाई थी ।
- ऋग्वेद में उल्लेख 275 बार । जिसका प्रमुख राजा होता था ।
- विष का उल्लेख 70 बार ।
- ग्राम का उल्लेख 13 बार ।
  1. सभा – ऋग्वेद में आठ बार उल्लेख, कुलीन लोगों की संस्था थी ।
  2. समिति – ऋग्वेद में नौ बार उल्लेख जनसामान्य की संस्था थी ।
  3. विदथ – यह सबसे प्राचीन संस्था है । 122 बार उल्लेख मिलता है । कार्यशैली की जानकारी नही मिलती ।

- आर्यो का प्रिय पशु घोडा था ।
- वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी ।
- तीन वर्णो का उल्लेख मिलता है ।
- महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्राप्त थे । घोषा, सिक्ता, अपाला, विषपला (योद्धा), नामक महिला विदुषियों को जिक्र मिलता है ।

ऋग्वेद काल में निम्न प्रमुख देवता थे ।

1. इंद्र – ऋग्वेद में 250 बार उल्लेख । इसे पुरंदर कहा गया है ।
2. वरूण – ऋग्वेद में 30 बार उल्लेख । ऋत का देवता है ।
3. अग्नि – ऋग्वेद मे 200 बार उल्लेख ।

आर्यो की अर्थव्यवस्था पशुपालन आधारित थी ।
युद्ध गायों के लिए होते थे ।

उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 ईसा पूर्व

- महत्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था

- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।
  (i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता
  (ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।
  (iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे । राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विद्थ का उल्लेख नहीं मिलता ।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।
- राजा की "दैवीय उत्पति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

आर्थिक जीवन

- कृषि का विकास हो चुका था ।
- अथर्ववेद मे "पृथवेन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है ।
  शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई,बुआई,कटाई) का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता मे (24 बैलों द्वारा खीचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है ।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी ।
- पशुपालन भी होता था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- विनिमय मे गाय व निस्क का प्रयोग होता था ।
  निस्क – सोने का आभूषण जो गले मे पहनते थे
- कृषि मे लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)
- समुद्र का ज्ञान हो गया था ।

सामाजिक जीवन

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार ।
- चार वर्णो मे समाज विभक्त हो गया था । किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था ।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था । आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे । (जनेऊ धारण करते हैं) उपनयन संस्कार होता था ।
  द्विज – दो बार जन्म लेने वाला
- शूद्रो को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।
- महिलाओं की स्थिति मे गिरावट आयी । (वृहदारण्य उपनिषद मे याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद मिलता है ।)
- अथर्ववेद मे पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है ।
- ऐतरेय ब्राह्मण में भी पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है । (पुत्री – कृपण कहा)
- मैत्रायणी संहिता मे भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था । उदाहरण – गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती ।
- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था ।

धार्मिक स्थिति

- प्रमुख देवता – ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।
  पाँच प्रकार के यज्ञ होते थे (पंचयज्ञ)।
  (i) ब्रह्म यज्ञ
  (ii) देव यज्ञ
  (iii) अतिथि यज्ञ
  (iv) पितृ यज्ञ
  (v) भूत यज्ञ
- ब्रह्म यज्ञ को "ऋषि यज्ञ", अतिथि यज्ञ को "मनुष्य यज्ञ" भी कहते थे । (भूत यज्ञ – प्राणी जगत् व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता)

3 ऋण
(i) ऋषि ऋण
(ii) देव ऋण
(iii) पितृ ऋण

बौद्ध धर्म

संस्थापक	– गौतम बुद्ध
जन्म	– 563 ईसा पूर्व
पिता	– शुद्धोधन
माता	– मायादेवी
मौसी	– प्रजापति गौतमी
पत्नी	– यशोधरा
पुत्र	– राहुल
जन्मस्थान	– लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
आधुनिक	– रुम्मिन देई, नेपाल
वंश	– इक्ष्वाकु शाक्य क्षत्रिय
गौत्र	– गौतम

- 4 घटनाएँ जिन्होने बुद्ध का जीवन बदल दिया –
  (i) वृद्ध व्यक्ति
  (ii) बीमार व्यक्ति
  (iii) मृत व्यक्ति
  (iv) सन्यासी
- 29 वर्ष की अवस्था मे गृहत्याग किया यह घटना "महाभिनिष्क्रमण" कहलाती है ।
- बुद्ध ने "मध्यम मार्ग" का प्रतिपादन किया ।
- बुद्ध उरूवेला चले गये एवं वहाँ निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- अब सिद्धार्थ "गौतम बुद्ध व शाक्य मुनि" के नाम से प्रसिद्ध हुये ।
- सारनाथ में कौडिन्य एवं अन्य ब्राह्मणों को पहला उपदेश दिया इसे "धर्मचक्र प्रवर्तन" कहते है
- सर्वाधिक उपदेश – श्रावस्ती मे दिये ।
- आनन्द प्रिय शिष्य तथा उपालि प्रमुख शिष्य था ।
- आनन्द के कहने पर भगवान बुद्ध ने महिलाओं को संघ मे प्रवेश दिया । प्रजापति गौतमी – पहली 'भिक्षुणी'
- 483 ईसा पूर्व मे बुद्ध की मृत्यु – कुशीनारा में गोरखपुर (U.P.)

- भगवान बुद्ध के प्रतीक –
  1. हाथी/ सफेद हाथी – भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक
  2. सांड/कमल – जन्म
  3. घोडा – गृहत्याग का प्रतीक
  4. बोधिवृक्ष/पीपल – ज्ञान का प्रतीक
  5. पद्चिन्ह – निर्वाण का प्रतीक
  6. स्तूप – मृत्यु का प्रतीक

7. सम्बोधि – 35 वर्ष की अवस्था मे गौतम बुद्ध को बोधगया मे निरंजना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।

ज्ञान/ दर्शन

4 आर्य सत्य
(i) दुःख है ।
(ii) दुःख का कारण है । (प्रतीत्य समुत्पाद)
(iii) दुःख निवारण है ।
(iv) दुःख निवारण का मार्ग है ।

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वचन
4. सम्यक कर्म
5. सम्यक जीविका
6. सम्यक प्रयास
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

कार्य कारण/ कारणता सिद्धान्त – प्रतीत्य समुत्पाद

(ऐसा होने पर –वैसा होना)
- दुःखों का कारण अविद्या को बताया है ।
- कर्म सिद्धान्त मे विश्वास रखते हैं ।
- पुनर्जन्म मे विश्वास रखते हैं ।
- अनात्मवादी होते हैं । आत्म की अमरता में विश्वास नहीं रखते है ।
- अनीश्वरवादी होते हैं । ईश्वर के प्रश्न पर बुद्ध मुस्करा देते थे ।
- क्षणिकवाद (अनित्यवादी) – इस जगत की सभी वस्तुऐं अनित्य एवं परिवर्तनशील हैं ।
- आम्रपाली (वैशाली) भी बौद्ध संघ मे सम्मिलित हो गयी थी ।

निर्वाण

- निर्वाण का शाब्दिक अर्थ "दीपक/विज्ञान का बुझ जाना" होता है ।
- भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है ।

बौद्ध धर्म की चार संगीति

समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष
1. 483 ई.पू.	राजगृह	अजातशत्रु	महाकस्यप
2. 383 ई.पू.	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
3. 251 ई.पू.	पाटलीपुत्र	अशोक	मोगलिपुततिस्य
4. 1st शताब्दी	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्ठ	अश्वघोष/ वसुमित्र

(1) प्रथम संगीति – दो पुस्तके (ग्रन्थ) लिखी गई
  i. सुत पिटकः – भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ, तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है।
     इसके खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ (जातक) मिलती हैं । इसकी रचना आनन्द ने की थी ।
  ii. विनय पिटक – संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओ के आचार विचार (आचरण) का वर्णन मिलता है इसकी रचना उपाली ने की थी ।

(2) द्वितीय संगीति – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया ।
  - स्थापित तथा महासंघिक – दो भागों मे विभक्त

(3) तृतीय संगीति – इसमे तीसरे पिटक – अभिधम्म पिटक की रचना की गई । इसमे ''बौद्ध धर्म के दर्शन'' का वर्णन है संयुक्त रूप से सुत – विनय – अभिधम्म पिटक को ''त्रिपिटक'' कहा जाता है अभिधम्म पिटक की रचना मोगलीपुत तीस्स ने की थी ।

(4) चतुर्थ संगीति – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया हीनयान (छोटी गाडी) एवं महायान (बडी गाडी)
हीनयान एवं महायान भी कई शाखाओं में विभक्त हो गया ।

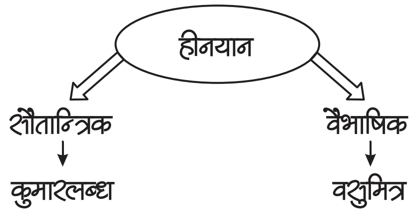

- अन्तिम लक्ष्य – निर्वाण = (अर्थ – बुझ जाना)
- मेत्रेय – भविष्य का बुद्ध
- बुद्ध ने पंचशील का सिद्धान्त दिया

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

बुद्ध, धम्म और संघ

- शंकराचार्य को प्रच्छन्न/छद्म बुद्ध कहा जाता है ।
- बौद्ध संग में प्रवेश उपसम्पदा कहलाती है ।
- गृह त्यागना प्रवज्ञा कहलाता है ।
- सुतपिटक को बौद्ध धर्म का एन साइक्लोपिडिया कहा जाता है ।
- बौद्ध धर्म का सबसे बडा स्तूप बोरो बदूर स्तूप इण्डोनेशिया में है ।

जैन धर्म

- संस्थापक – ऋषभदेव/आदिनाथ का वर्णन ऋग्वेद मे
- 21वें तीर्थकर – नेमीनाथ
- 22वें तीर्थकर – अरिष्टनेमी – (कृष्ण के समकालीन)
- 23वें तीर्थकर – पार्श्वनाथ

महावीर स्वामी (24वें)

महावीर को निगठनाथपुत कहा जाता है ।

- जन्म – 599 B. C. भाई – नन्दीवर्धन
- स्थान – कुण्डग्राम
- मृत्यु – पावापुरी (बिहार)
- बचपन का नाम – वर्धमान
- पिता – सिद्धार्थ
- माता – त्रिशला
- पत्नी – यशोदा
- पुत्री – प्रियदर्शना दामाद – जामाली
- 30 वर्ष में गृहत्याग ।
- 13 माह पश्चात् वस्त्र त्याग भद्रबाहु की पुस्तक कल्प सूत्र से जानकारी मिलती है
- 12 वर्ष की तपस्या के पश्चात् ज्ञान प्राप्ति ।
- जुम्बिकाग्राम मे ऋजुपालिका नदी के किनारे पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति
- प्रथम शिष्य – जामाली ।
- जामालि ने ही प्रथम विद्रोह किया ।
- आरम्भिक 11 शिष्यों को ''गणधर'' कहा जाता है
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर व जिन (विजेता) कहलाये ।
- इन्होने त्रिरत्न की अवधारणा दी
  (i) सम्यक् ज्ञान
  (ii) सम्यक् दर्शन
  (iii) सम्यक् चरित्र
- पंचव्रत – महाव्रत (भिक्षुओ के लिए)
  अणुव्रत (गृहस्थों के लिए)
- कर्म सिद्धान्त (कर्म फल) तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखते है ।
- आत्मा को जीव कहते है ।
- आस्रव – पुद्गलो का जीव की तरफ प्रवाहित होना
- संवर – जीव की तरफ पुद्गलो के होने वाले प्रवाह का रूक जाना ।
- निर्जरा – जीव से अजीव के प्रवेश को निकालने कि क्रिया ।

त्रिरत्न- सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र

अनेकान्तवाद

- यह जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय सिद्धान्त है ।
- इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।

स्यादवाद

- यह जैन दर्शन का ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्त है ।

1. जैन संगीति

समय	300 ई.पू.
शासक	चन्द्रगुप्त मौर्य
स्थान	पाटलिपुत्र
अध्यक्ष	स्थलबाहु व भद्रबाहु

- जैन धर्म दो भागों में विभक्त हो गया ।
- स्थलबाहु के अनुयायी-श्वेताम्बर (तेरापंथी)
- भद्रबाहु के अनुयायी – दिगम्बर (समैया)

2. जैन संगीति

512 ई. में वल्लभी (गुजरात) में इसके देवर्धिगणि अध्यक्ष थे ।

संथारा प्रथा

जब व्यक्ति अन्न जल त्याग देता है । मौन व्रत धारण कर लेता है तथा अन्त में देहत्याग कर देता है ।

महाजनपद काल

भारतीय इतिहास की दूसरी नगरीय क्रांति ।

- 16 महाजनपदों का उल्लेख बौद्धों के ग्रन्थ "अंगुतर निकाय" एवं जैनों के ग्रन्थ "भगवती सूत्र" से मिलता है
- भगवती सूत्र महावीर की जीवनी है ।

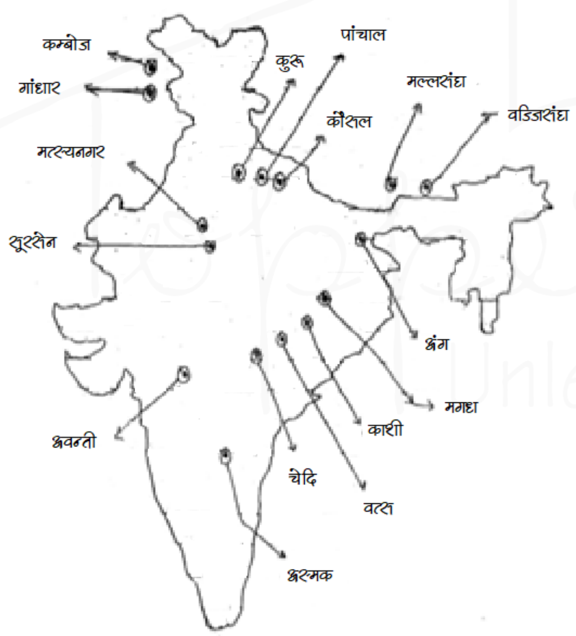

	राज्य	राजधानी
1	कम्बोज	हाटक
2	गांधार	तक्षशिला
3	कुरू	इन्द्रप्रस्थ
4	पांचाल	काम्पिल्य
5	कौशल	श्रावस्ती (साकेत)
6	मल्ल संघ	कुशीनारा, कुशीनगर
7	वज्जी संघ	विदेह/वैशाली
8	अंग	चम्पा
9	मगध	राजग्रह, गिरिवज, पाटलीपुत्र
10	काशी	बनारस/वाराणसी
11	वत्स	कौशाम्बी
12	चेदि	शक्तिमती
13	अस्मक	पोटन (पोटलि)
14	अवन्ती	उज्जयिनी
15	शूरसेन	मथुरा
16	मत्स्यनगर	विराट नगर

- अस्मक एक मात्र महाजनपद था जो दक्षिण भारत में स्थित था ।
- मल्ल संघ एवं वज्जि संघ में गणतंत्र था ।
- मल्ल संघ के अंतर्गत दो गणराज्य थे एवं वज्जि संघ के अंतर्गत आठ गणराज्य थे ।

मगध राज्य का इतिहास
हर्यक वंश (544-412 ईसा पूर्व)

1. बिम्बिसार

- मत्स्य पुराण में इसे क्षत्रोजस कहा है ।
- जैन साहित्य में - श्रीणिक/श्रैणिक
- कोशल के शासक प्रसेनजीत की बहन कोशला देवी से विवाह किया
- अंग के शासक चेटक की पुत्री चैल्लना से विवाह किया ।
- अंग प्रदेश को जीतकर अजातशत्रु को गवर्नर नियुक्त किया ।
- चिकित्सक जीवक को अवन्ती के शासक चंड प्रद्योत के दरबार में भेजा ।

2. अजातशत्रु

- कुणिक नाम से प्रसिद्ध
- मंत्री वस्सकार को फूट डालने के लिए वज्जी संघ भेजा तथा वैशाली का विलय मगध में किया
- रथमूसल एवं महाशिलाकंटक का प्रयोग इस युद्ध में किया ।
- सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया ।
- इसके शासन के 8 वें वर्ष में भगवान बुद्ध की मृत्यु हुई ।
- पाटलीपुत्र अजात शुत्र ने बसाया (राज. की. मा. शिक्षा बोर्ड कक्षा 11 वी के अनुसार)

3. उदायिन/उदयनद्

- सोन एवं गंगा नदी के किनारे कुसुमपुरा नगर बसाया जिसे पाटलीपुत्र कहते है । (दिल्ली विश्वविद्यालय के अनुसार)

शिशुनाग वंश

1. शिशुनाग
   - वैशाली को राजधानी बनाया ।
2. कालाशोक
   - द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया ।
   - पाटलीपुत्र को पुनः राजधानी बनाया ।

नन्द वंश

1. महापद्मनन्द
   - इसे दूसरा ''भार्गव'' परशुराम कहते है । सर्वक्षत्रांतक – क्षत्रियों का नाश करने वाला कहते है ।
   - जैन धर्म को संरक्षण दिया ।
   - हाथीगुफा अभिलेख– इसके अनुसार इसने कलिंग को जीता । कलिंग में नहर का निर्माण करवाया वहाँ से जिनसेन की मूर्ति लाया ।
   - पुराणों में नन्द वंश के शासकों को (शूद्र) कहा गया है ।

2. धनानन्द

चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसकी हत्या कर दी । (320 ई. पू. में) सिकन्दर के समकालीन था ।

विदेशी आक्रमण

फारस (ईरानी आक्रमण)
हखमनी साम्राज्य (वंश)

डेरियस (दारयबहु/दारा)

भारत पर पहला विदेशी आक्रमण । गंधार कम्बोज पर अधिकार कर लिया था ।

ग्रीक/यूनानी आक्रमण

1. अलेक्जेण्डर/सिकन्दर

पिता	–	फिलिप
गुरू	–	अरस्तु
माता	–	ओलम्पिया

- यह मकदूनिया/मैसिडोनिया का शासक था ।
- गांधार (तक्षशिला) के शासक आम्भी ने सिकन्दर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया ।
- झेलम/वितस्ता/हाइडेस्पीज का युद्ध – 326 ई. पू. सिकन्दर बनाम पोरस (पुरू) के मध्य झेलम नदी के पास हुआ पोरस पराजित हुआ ।
- सिकन्दर पोरस की बहादुरी से प्रभावित हुआ एवं उसे उसका राज्य वापस लौटा दिया ।
- सिकन्दर 19 महीने तक भारत में रूका ।

मौर्य वंश

1. चन्द्रगुप्त मौर्य :–(322 ईसा पूर्व– 298 ईसा पूर्व)
   - यूनानियों ने चंद्रगुप्त मौर्य को सेण्ड्रोकॉट्स कहा है । इस नाम की पहचान सर्वप्रथम विलियम्स जॉन्स ने की ।
   - 305 ईसा पूर्व में सेल्युकस निकेर को पराजित किया
   - चन्द्रगुप्त का विवाह हेलना (सेल्यूकस की बेटी) से हुआ । मौर्य ने बदले में सेल्यूकस को 500 हाथी दिये ।
   - सेल्युकस निकेटर का दूत मैगस्थनीज तात्कालिक भारत की जानकारी देता है ।
   - मैगस्थनीज की पुस्तक – 'इण्डिका'
   - 298 B.C भद्रबाहु के साथ दक्षिण भारत में श्रवण बेलागोला गया । संलेखना/सन्थारा पद्धति द्वारा प्राण त्याग दिये । (कर्नाटक)
   - चंद्रगुप्त मौर्य को प्रथम साम्राज्य निर्माता शासक कहते है ।

2. बिन्दुसार :– (298–273 ईसा पूर्व)
   - प्रथम सिजेरियन बेबी ।
   - साहित्य में इसे ''अमित्रोकेडीज'' कहा है ।
   - यूनानी इतिहासकार इसे ''अमित्रोचेडस्'' कहते है
   - जैन ग्रंथों में इसे 'सिंहसेन' कहा है ।
   - दो दूत इसके दरबार में आये :–
     1. डाइमेकस (सीरिया) 2. डायनोसियस (मिस्र)
   - इसके काल में दो विद्रोह हुए तक्षशिला एवं अवंती
   - सीरिया के शासक एन्टीयोकस से 3 वस्तुओं की मॉग की ।
     i. मीठी शराब (भेजेगे)
     ii. सूखे अंजीर (मेवे)
     iii. दार्शनिक (मना किया)
   - यह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था ।

3. अशोक :– (273 ईसा पूर्व से से 232 ई. पू.)
   - 269 ई.पू. राज्याभिषेक हुआ ।
   - बौद्ध साहित्य के अनुसार इसने 99 भाईयों की हत्या कर दी ।
   - शासन के आठवें वर्ष में कलिंग पर आक्रमण किया।

- कलिंग का शासक संभवतः नन्दराज था । इस युद्ध में 1 लाख लोग मारे गये । 1.5 लाख लोगो को युद्धबंदी बनाया गया । (अशोक के 13 वें अभिलेख से जानकारी)
- यह जानकारी खारवेल के हाथीगुफा अभिलेख से मिलती है ।
- खारवेल चेदी (छेदी) वंश का शासक था ।
- इस युद्ध के बाद अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया अशोक ने युद्ध घोष के स्थान पर धम्म घोष को अपनाया ।
- अशोक ने राजा अभिषेक के 10 वें वर्ष बोध गया की यात्रा की 20 वें वर्ष लुम्बिनी की यात्रा की ।
- लुम्बिनी यात्रा की जानकारी अशोक के रूम्मीनदेई अभिलेख में मिलते है । वहां की जनता का कर कम कर 1/6 से 1/8 किया ।
- रूम्मनदेई अभिलेख को अशोक का आर्थिक देई घोषणा पत्र कहते है ।
- अशोक शैव धर्म का अनुयायी था । मोगलिपुत्ततिस्य ने इसे बौद्ध धर्म मे परिवर्तित किया । कुछ बौद्ध ग्रंथ निग्रोथ से प्रभावित होकर अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने की बात करते है ।
- सिंहली धर्म ग्रंथ अशोक के उपगुप्त द्वारा बौद्ध धर्म में दिक्षित होने की बात करते है ।
- अशोक के बौद्ध धर्म ग्रहण करने की जानकारी भाब्रुक अभिलेख मिलती है ।
- अशोक ने शासन के 14 वें वर्ष में महाधम्मपात्रों की नियुक्ति की थी ।
- अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघ मित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा था ।

अशोक के अभिलेख

- पाट्रेटी केथैलर ने 1750 में खोज की ।
- 1837 में जेम्स प्रिसेंप इनको पढने में सफल रहा
- भाषा — प्राकृत या मगधी
  यूनानी भाषा (ग्रीक भाषा)

लिपियां :- ब्राह्मी लिपि
खरोष्ठी लिपि
युनानी/अरामेइक लिपि

शर-ए-कुना अभिलेख (काबुल के पास) से 2 लिपियों अरामेइक, ग्रीक एवं ब्राह्मी लिपि के लेख मिले है

1. **वृहद शिलालेख** :- इनकी संख्या 14 है तथा 8 स्थानों से प्राप्त होते है
   13 वें अभिलेख में कलिंग युद्ध का वर्णन मिलता है

2. **लघु शिलालेख** - इसमें अशोक की व्यक्तिगत जानकारियाँ मिलती है ।
   1. मास्की
   2. गुर्जरा
   3. उदेगोलम
   4. नेट्टुर

   — इनमें अशोक के नाम का उल्लेख मिलता है ।

– अन्य अभिलेखों में अशोक की उपाधि देवानामप्रिय/देवानामप्रियदर्शी का उल्लेख मिलता है ।

3. वृहत् स्तम्भ लेख

अभिलेखों की संख्या 7 है एवं यह 6 स्थानों से प्राप्त होते है ।

i. **प्रयाग प्रशस्ति** :-यह मूलरूप से कौशाम्बी में था अकबर ने इसे प्रयाग में स्थापित करवाया ।

1 2 3 4 5 6 अशोक
रानी
समुद्रगुप्त
बीरबल
जहाँगीर

इस प्रशस्ति पर इनके भी नाम मिलते है ।

ii. **टोपरा (Delhi)** :- यह टोपरा में स्थित था ।
   - फिरोज तुगलक ने इसे दिल्ली में स्थापित करवाया
   - इस पर पूरे 7 अभिलेख मिलते है (एकमात्र)
   - 7 वें अभिलेख में जैन धर्म एवं आजीवक धर्म की जानकारी मिलती है ।

iii. **मेरठ-दिल्ली अभिलेख** :- मूलरूप से मेरठ में था ।
   - फिरोज ने इसे दिल्ली में स्थापित करवाया ।

4. लघु स्तम्भ लेख

- इनमें अशोक की राजनीतिक एवं आर्थिक गतिविधियों की जानकारी मिलती है ।
- सांची एवं सारनाथ के लेखो में बौद्ध भिक्षुओं को चेतावनी दी गयी है ।
- रूम्मिनदेई अभिलेख में आर्थिक जानकारी मिलती है

5. गुफा/गुहा लेख
- कर्ण चौपड गुफा
- सुदामा गुफा
- विश्व झोपडी

4. बृहद्रथ

- अन्तिम मौर्य शासक (185 ई. पू.)
- सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने इसकी हत्या कर दी इसके बाद शुग वंश की स्थापना की ।

मौर्योत्तरकाल (185BC – 319 ईस्वी)

शुंग वंश (185 ईसा पूर्व – 75 ईसा पूर्व)

पुष्यमित्र शुंग

- ब्राह्मण शासक
- बौद्ध साहित्य में इसे "बौद्ध धर्म का दुश्मन" बताया है ।
- इसने मगध में कुक्टारा/कक्कुटारा विहार को तोडने का असफल प्रयास किया ।
- बाणभट्ट के हर्षचरित से जानकारी मिलती है कि पुष्यमित्र ने मौर्यशासक वृहद्रथ की हत्या की । (अनार्य भी कहा है)
- इसने 2 अश्वमेघ यज्ञों का आयोजन करवाया । यज्ञों के प्रधान पुरोहित-पतंजलि थे ।
- अयोध्या अभिलेख एंव मालविका अग्निमित्र (मालविकाग्निमित्र) से जानकारी मिलती है । (2 अश्वमेघ यज्ञों की)

पुस्तकें (पंतजलि द्वारा रचित)

- योगदर्शन
- योगसूत्र
- महाभाष्य (पाणिनि की अष्टाध्यायी पर लिखित)

  ↓ व्याकरण की प्रथम पुस्तक

भागभद्र

- यूनानी शासक एंटियोलकिडास का राजदूत हेलियोडोरस विदिशा आया ।
- विदिशा के बेसनगर में हेलियोडेरस ने गरूड स्तम्भ स्थापित करवाया ।
- हेलियोडोरस ने वैष्णव धर्म स्वीकार कर लिया था
- विदिशा शुंगो की नई राजधानी थी ।

सांची/धमेक स्तूप

साँची स्तूप का पुनर्निर्माण शुंगकाल में हुआ ।

कण्व वंश (75 – 30 ईसा पूर्व)

1. वासुदेव कण्व – संस्थापक
2. सुशर्मा – अंतिम शासक

इण्डो – ग्रीक

1. डेमिट्रीयस (संस्थापक)
   सकल (स्यालकोट) ← राजधानी
2. मेनांडर (मिलिन्द)
   – नागसेन बौद्ध भिक्षु के साथ वार्तालाप
   – पुस्तक – मिलिन्दपन्हों
   विषय – बौद्ध दर्शन
3. हर्मियस – अन्तिम इण्डो – ग्रीक शासक

1. युक्रेटाइड्स (संस्थापक)
   राजधानी → तक्षशिला
2. एंटियोलकिडास
   – अपना दूत हेलियोडोरस भागभद्र के दरबार में भेजा ।

शक

- शक मध्य एशिया की बर्बर जाति थी ।
- यू ची कबीले ने इन्हें पराजित किया ।
- भारतीय साहित्य में इन्हें सिथीयन कहा जाता है ।

शकों के भारत में केन्द्र
- तक्षशिला
- मथुरा
- नासिक
- उज्जैन

सबसे प्रसिद्ध शासक – रूद्र दामन
- जूनागढ अभिलेख के अनुसार इसने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया ।
- जूनागढ अभिलेख संस्कृत भाषा का प्रथम बडा अभिलेख है ।
- शकों ने चाँदी के सिक्के बडी मात्रा में चलाए । रूद्रसिंह तृतीय अन्तिम शक शासक था ।

कुषाण

यह मध्य एशिया के यू ची कबीले से थे ।

1. कुजुल कडफिसस – संस्थापक
   - इसे प्रथम कडफिसस भी कहा जाता है ।

2. विम कडफिसस
- इसे दूसरा कडफिसस कहा जाता है ।
- यह भगवान शिव का अनुयायी था ।
- उपाधि = महेश्वर
- इसके सिक्कों पर त्रिशूल, नन्दी, डमरू के चित्र मिलते हैं ।

3. कनिष्क
- कनिष्क ने 78 ईस्वी में शकों को पराजित कर शक सम्वत चलाया ।
- इसके समय गांधार मूर्तिकला का विकास होता है ।
- बुद्ध की प्रथम मूर्ति मथुरा शैली में बनी थी जो बुद्ध का धार्मिक चरित्र चित्रण करती है ।
- कनिष्क ने हान वशं (चीन) के शासक पानचाओ को पराजित किया ।

इसकी 2 राजधानियाँ थी :-
1. पुरूषपुर/पेशावर
2. मथुरा

पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया तथा वहाँ से 3 वस्तुएं प्राप्त की :-
1. भगवार बुद्ध का भिक्षा पात्र
2. एक विशेष मुर्गा (कुक्कट)
3. अश्वकोष → पुस्तक (बुद्धचरित्र) (इसका आरम्भिक भाग बौद्ध धर्म का एनसाइक्लोपिडिया कहा जाता है)
   I. सुत्रालंकार
   II. सारीपुत्र प्रकरण
   III. सौन्दरानंद

गुप्तवंश

1. श्रीगुप्त (240-280 ई.पू.)
- गुप्त वंश का संस्थापक माना जाता है ।
- इसे गुप्त वंश का आदि पुरूष कहा गया है ।

2. चन्द्रगुप्त (319-335 ई.पू.)
- गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक
- 319 ईस्वी में गुप्त सम्वत चलाया ।
  (319 ईस्वी. में ही वल्लभी सम्वत् भी आरम्भ हुआ ।
- ''महाराजाधिराज'' की उपाधि धारण की ।
- लिच्छवी राजकुमारी कुमारी देवी से विवाह किया तथा कुमारी देवी का नाम सिक्कों पर अंकित करवाया ।

3. समुद्रगुप्त (335-375 ईस्वी)
- वंश का सबसे महान शासक था ।
- हरिषेण की प्रयाग प्रशस्ति से जानकारी मिलती है
- यह प्रशास्ति चम्पु शैली में लिखित है ।
- इसके सिक्कों पर इसे '' लिच्छविदौहित्र'' बताया गया है
- उत्तर भारत के 3 राज्यों को पराजित किया एवं प्रसभोद्धरण (जड-मूल से उखाड फेकना) की नीति अपनाया ।
- दक्षिण भारत के 12 राज्यों को पराजित कर ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति अपनायी । इसके तहत उन्हें पराजित करके कर लेकर अनुगृहित किया गया
- उत्तर भारत के 9 राज्यों को पराजित किया ।
- धरणीबन्ध की उपाधि धारण की
- अश्वमेध प्रकार के सिक्के चलाये ।
- वीणा वादक था ।
- 6 प्रकार के सोने के सिक्के प्रचलन में थे ।
  1. गरूड (सर्वाधिक महत्वपूर्ण)
  2. परशु
  3. धनुर्धर
  4. व्याघ्रहर्ता 'व्याघ्रहनन'
  5. अश्वमेघ
  6. वीणावादन
- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने बोध गया में मन्दिर निर्माण कराया ।
- इतिहासकार वी. स्मिथ समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन बताता है ।

4. चन्द्र गुप्त द्वितीय (375 - 414 ई.पू.) :-

उपाधियाँ - विक्रमादित्य, परमेश्वर
- अन्तिम शक शासक रूद्रसिंह तृतीय की हत्या की एवं 'शकारि' उपाधि धारण की ।
- अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक (MH) शासक रूद्रसेन द्वितीय से किया ।
- महरौली के लौह स्तम्भ का सम्बन्ध चन्द्रगुप्त द्वितीय से है ।

इसके दरबार में नवरत्न थे -
1. कालिदास
2. वराहमिहिर
3. क्षपणक
4. शंकु
5. वररूची
6. धनवन्तरि
7. अमरसिंह
8. बेताल भट्ट/भट्टी
9. घटकर्पर